B.A. F Ashoka

धम्म का स्वरूप (Nature) ①

1st Day

अशोक के 'धम्म' का वास्तविक स्वरूप क्या था, एक विवादास्पद प्रश्न है। कुछ इतिहासकार इसे बौद्ध धर्म मानते हैं और कुछ राजधर्म। डॉ॰ रोमिला थापर ने 'धम्म' को "अशोक का अन्वेषण" स्वीकार किया है। फ्लीट ने अशोक के 'धम्म' को राजधर्म बताया है जिसमें राजनीतिक एवं नैतिक सिद्धान्तों का समावेश था। डॉ॰ आर॰ जी॰ भण्डारकर के अनुसार अशोक का 'धम्म' धर्म निरपेक्ष बौद्ध धर्म के अतिरिक्त कुछ नहीं था। बौद्ध सूत्रों में मूल रूप से बौद्ध धर्म के दो पहलुओं का उल्लेख है - भिक्षुओं के लिए और गृहस्थों के लिए। अशोक का 'धम्म' गृहस्थों का धर्म है। डॉ॰ नीलकंठ शास्त्री का मत है कि "अशोक ने बौद्ध धर्म को एक शुष्क बौद्धिक ज्ञान की खोज के स्थान पर एक आकर्षक, भावनात्मक एवं लोकप्रिय धर्म में परिवर्तित कर दिया।" उसका 'धम्म' सामाजिक नीतिशास्त्र की एक व्यावहारिक संहिता था। धर्म अथवा दर्शन से उसका कोई मतलब नहीं था। इसमें नैतिक आदर्शों की प्रधानता थी। अतः इसे हम सभी धर्मों का सार कह सकते हैं। डॉ॰ स्मीथ ने भी अशोक के 'धम्म' को सामान्य नैतिक आदर्श के रूप में स्वीकार किया है। उनका मत है कि "अशोक का 'धम्म' किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्धित न था बल्कि उसके सिद्धान्त तो प्रत्येक भारतीय धर्म में सामान्य हैं।" वास्तव में अशोक के अभिलेखों का धर्म किसी एक धार्मिक सम्प्रदाय का धर्म न होकर जाति अथवा धर्म से अलग एक नैतिक कानून है। इस प्रकार कुछ इतिहासकार यह स्वीकार करते हैं कि अशोक -